एस.पी. जैन गुरुकुल उच्चतर माध्यमिक विद्यालय, खुरई

गुरुकुल सन्देश

विद्यालय का मासिक मुखपत्र

अंक-84 www.gurukulkhurai.in माह- अगस्त 2026

सम्पादकीय...



सीभा खान मंसूरी

हमारी कलम, हमारी अभिव्यक्ति

हम नवमीं के विद्यार्थियों के लिए विद्यालय की पत्रिका 'गुरुकुल संदेश' का अगस्त अंक प्रस्तुत करना अत्यंत गौरव का विषय है। यह पत्रिका हमारे विद्यालय परिवार के परिश्रम और विद्यार्थियों की सृजनात्मकता की जीवंत अभिव्यक्ति है।

शिक्षा का उद्देश्य केवल अंक लाना नहीं, बल्कि एक जिम्मेदार व संस्कारी नागरिक बनना है। इस अंक को तैयार करते समय हमें अपने सहपाठियों की कविताओं, लेखों और कला में छिपी अद्भुत प्रतिभाओं को जानने का अवसर मिला। इससे यह भी सिद्ध हुआ कि कोई भी बड़ा कार्य सामूहिक प्रयास से ही सफल होता है।

'हमारी कलम, हमारी अभिव्यक्ति' इस अंक का मूल भाव है। हम अपने आदरणीय शिक्षकों के हृदय से कृतज्ञ हैं, जिनके निरंतर मार्गदर्शन और सहयोग के बिना यह कार्य संभव नहीं था। रचनाएँ साझा करने वाले सभी मित्रों का भी विशेष आभार।

जिन्होंने अभी तक अपनी प्रतिभा सामने नहीं रखी, उनसे हमारा आग्रह है कि आगे आएँ और अपनी कलम को आवाज़ दें! आधुनिक युग में तेजी से आगे बढ़ने के साथ-साथ हमें अपने संस्कारों और मानवीय मूल्यों को भी सहेजना है।

हमें पूर्ण विश्वास है कि यह अंक आपको प्रेरणा और आनंद देगा। आदरणीय प्राचार्य जी और समस्त विद्यालय परिवार का हार्दिक आभार। आइए, अपनी कलम को पहचान बनाएँ और प्रतिभा को नई उड़ान दें!

अभिव्यक्ति...



प्रयंक जैन (प्राचार्य)

स्वतंत्रता और अनुशासन का संतुलन

स्वतंत्रता का सच्चा अर्थ 'जो मन चाहे वह करना' नहीं, बल्कि 'जो उचित है उसका चयन करना' है। नदी जब तक दोनों तटों के बंधन में बहती है, तब तक वह जीवनदायिनी होती है; किंतु जैसे ही वह तटों को तोड़ती है, प्रलयकारी बाढ़ बन जाती है। ठीक उसी प्रकार, मानव जीवन में बंदिशें; उसकी प्रतिभा और ऊर्जा को सही दिशा में प्रवाहित करने का कार्य करती हैं।

बंदिशों का लोप व्यक्ति को स्वतंत्र नहीं बल्कि उसकी अनियंत्रित इच्छाओं का दास बना देता है। मानवीय गरिमा की रक्षा के लिए सामाजिक मर्यादा, विधि का शासन और आत्म-संयम अनिवार्य ढाल हैं। इनके बिना सभ्यता का अस्तित्व खतरे में पड़ना तय है।

माह अगस्त में संपन्न विभिन्न प्रतियोगिताओं (सांस्कृतिक, साहित्यिक, खेल एवं पटल सज्जा) में से सर्वाधिक अंक प्राप्त कर श्रेष्ठ सदन के रूप में शिवाजी सदन रहा |

श्रेष्ठ सदन - माह अगस्त

शिवाजी सदन



तमाम छल-छंद, नीरस श्रम और टूटे स्वप्नों के बावजूद यह संसार अभी भी सुंदर हैं, सतर्क रहिये किन्तु प्रसन्न रहने का प्रयत्न करिये ||

गुरुकुल में उत्साह के साथ मनाया गया स्वतंत्रता-दिवस

"न सरकार मेरी है न रौब मेरा है, न बड़ा सा नाम मेरा है |
मुझे बस एक ही बात का गौरव है मैं हिन्दुस्तानी हूँ और
हिन्दुस्तान मेरा है ||"





80वें स्वतंत्रता दिवस के ऐतिहासिक अवसर को ध्यान में रखते हुए, हमारे विद्यालय "गुरुकुल" में स्वतंत्रता दिवस बड़े उत्साह और नए संकल्पों के साथ मनाया गया। प्रकृति का कहर भी इस ज़ज्बे को हिला न सका; लगातार हो रही बारिश भी कर्मठ शिक्षकों एवं अनुशासित विद्यार्थियों के कदम रोक न सकी।

कार्यक्रम को मुख्य रूप से तीन भागों में बाँटा गया – भाषण, काव्य पाठ एवं समूह नृत्य जिसमें विद्यालय के चारों सदनों ने प्रत्येक विधा में बढ़ चढ़ कर भाग लिया, कार्यक्रम का सूक्ष्म दृष्टि से अवलोकनार्थ हेतु निर्णायक मंडल को नियुक्त किया गया, जिसकी भूमिका विद्यालय के वरिष्ठ शिक्षक श्री राकेश जैन, श्रीमती अनीता सिंघई एवं श्रीमती भारती ठाकुर ने निभाई |

कार्यक्रम के अंत में देशभक्ति का वास्तविक अर्थ समझाते हुए संस्था के प्राचार्य श्री प्रयंक जैन जी ने कहा कि – "आज के इस आधुनिक युग में स्वतंत्रता दिवस पर केवल ध्वज फहराना ही देशभक्ति नहीं है, अपितु अपनी शिक्षा, तकनीकी ज्ञान और नवाचार (इन्नोवेशन) के माध्यम से देश को वैश्विक स्तर पर मजबूत और सशक्त बनाने में अपना योगदान देना भी सच्ची देशभक्ति है।"









भविष्य की एक सुबह

सीमा खान | नवमीं ब

"भविष्य आज के छोटे-छोटे फैसलों से बनता है।"

सुबह मेरी आँख खुली, कमरे की खिड़की अपने आप खुली और मेरी स्मार्ट घड़ी ने कहा, "Good Morning!"। बाहर निकली तो सड़क पर इलेक्ट्रिक वाहन चल रहे थे और चारों ओर हरियाली थी। स्कूल में किताबों के साथ AI की मदद से पढ़ाई हो रही थी।

तकनीक हमें आगे बढ़ा सकती है, लेकिन इंसानियत ही हमें बेहतर इंसान बनाती है। घर लौटते समय मैंने साफ नदी और हरे-भरे पेड़ देखे। मुझे महसूस हुआ कि भविष्य केवल नई मशीनों से नहीं, बल्कि स्वच्छ प्रकृति और अच्छी सोच से बनेगा।

"भविष्य वैसा होगा, जैसा हम आज तय करेंगे।"

Think - Guess - Answer!



Sibha Khan | 9th 'B'

Challenge your brain and have fun!

Brain Teasers

1. What has hands but cannot clap?
2. What comes down but never goes up?
3. What has a neck but no head?
4. What has words but never speaks?

Thought

- **Believe in yourself, keep learning and keep moving forward.**
- **"Small steps today create a better tomorrow."**

सफलता एक दिन में नहीं मिलती, लेकिन अगर ठान लो तो एक दिन जरूर मिलती है।

गोस्वामी तुलसीदास जयंती के अवसर पर प्रश्नमंच...

गोस्वामी तुलसीदास जी की जयंती के अवसर पर विद्यालय में प्रश्नमंच का आयोजन किया। हिंदी विभाग के वरिष्ठ शिक्षक श्री एच. के. अग्निहोत्री के निर्देशन में यह कार्यक्रम सदनवार प्रश्नमंच के रूप में हुआ। जिसका संचालन श्री श्रीराम चतुर्वेदी द्वारा किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष संस्था प्राचार्य श्री प्रयंक जैन, मुख्य अतिथि श्री अशोक जैन ने दीप प्रज्वलित कर आरती की। तत्पश्चात् श्री एच. के. अग्निहोत्री ने सभी अतिथियों का चन्दन तिलककर स्वागत किया। संचालनकर्ता ने प्रतिभागियों को मंच पर आमंत्रित करने के साथ ही प्रतियोगिता के नियमों से सभी को अवगत कराया। जिसमें अरविंदो सदन, निवेदिता सदन, शिवाजी सदन एवं विवेकानंद सदन के विद्यार्थियों ने कार्यक्रम में अपने-अपने सदन का प्रतिनिधित्व किया।सम्पूर्ण कार्यक्रम 4 भागों में रखा गया। प्रतिभागियों ने अपने सदन को अपने ज्ञान और बुद्धि-विवेक से आगे ले जाने का प्रयास किया। कार्यक्रम की परिधि महान साहित्कार गोस्वामी तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व पर आधारित थी। एक्सपर्ट के रूप में श्रीमती प्रियंका पांडे, श्रीमती भारती राठौर, श्रीमती प्रिया जैन एवं श्री रविकांत सोनी ने विद्यार्थियों को अपना विशेष सहयोग प्रदान किया। अध्यक्ष महोदय ने सभी प्रतिभागियों को उनके ज्ञान-प्रदर्शन और प्रयासों ले लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के आभारी के रूप में श्री एच. के. अग्निहोत्री ने कार्यक्रम की सफलता के लिए सभी का आभार व्यक्त किया।










जल ही जीवन है

महिमा कोरी | नवमीं ब

जल हमारे जीवन का आधार है। जल के बिना पृथ्वी पर जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती है। यह बहुत आवश्यक है। आज बढ़ती जनसंख्या और जल के अत्यधिक उपयोग के कारण जल की समस्या बढ़ती जा रही है। कई स्थानों पर लोगों को पीने के लिए भी पर्याप्त जल नहीं मिल पाता। जल को व्यर्थ बहाना और उसे प्रदूषित करना हमारे भविष्य के लिए बहुत बड़ी समस्या बन सकती है। हमें स्वच्छ जल का महत्व समझना चाहिए और इसे बचाना चाहिए। हमें वर्षा के जल का संग्रह करना चाहिए और इसकी एक-एक बूंद को व्यर्थ नहीं छोड़ना चाहिए। हमें जलस्रोतों को स्वच्छ रखना चाहिए और अपने आस-पास के लोगों को भी जल संरक्षण के लिए जागरूक करना चाहिए। यदि आज हम जल बचाएंगे, तभी आने वाली पीढ़ियों को पर्याप्त जल मिल सकेगा। इसलिए हमें संकल्प लेना चाहिए कि हम जल को व्यर्थ नहीं बहाएंगे और दूसरों को भी जल बचाने के लिए प्रेरित करेंगे।

बूंद-बूंद से भरता है घड़ा,
पानी न बचाया तो संकट होगा खड़ा!



अगर आप खुद पर विश्वास करते हैं, तो आधी जीत आप पहले ही हासिल कर चुके हैं।

रुचि का महत्व

✍श्री देवेन्द्र जैन (शिक्षक)

"मन के हारे हार है, मन के जीते जीत।" - मानव जीवन में किसी भी लक्ष्य को पाने के लिए सबसे महत्वपूर्ण तत्व किसी व्यक्ति, वस्तु या कार्य के प्रति 'रुचि' (Interest) का होना है। रुचि के आधार पर ही हमें चीजें अच्छी या बुरी लगती हैं।

यदि किसी कार्य के प्रति हमारी गहरी रुचि है, तो वह हमें सफलता की ओर ले जाता है। जब हम किसी काम को मन लगाकर और रुचिपूर्वक करते हैं, तो वह उत्कृष्ट बनता है और सफलता अवश्य मिलती है। इसके विपरीत, यदि हम बिना मन या अरुचि के कोई काम करते हैं, तो वह बोझिल बन जाता है और असफलता का कारण बनता है।

इसलिए, जीवन में किसी भी क्षेत्र में सफलता पाने के लिए उस कार्य के प्रति अटूट विश्वास होना चाहिए। जब हमारा मन किसी काम में पूरी तरह से लग जाता है, तब बाधाएं अपने आप दूर हो जाती हैं और व्यक्ति का जीवन पूरी तरह सफल, संतुष्ट और आनंदमय हो जाता है।

विद्यार्थी के जीवन में अनुशासन का महत्व

महिमा कोरी | नवमीं ब

अनुशासन विद्यार्थी जीवन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। यह विद्यार्थी के जीवन में एक ऐसा गुण है, जिससे वह अपने जीवन के सभी कार्यों को सही समय पर और सही ढंग से कर सकता है। अनुशासन विद्यार्थी को एक आदर्श नागरिक बनने में मदद करता है।

एक अनुशासित विद्यार्थी समय का पाबंद होता है। वह अपने सभी काम समय पर करता है। पढ़ाई करना, खेलना, और आराम करना - सभी कामों का एक निश्चित समय होता है। अनुशासन से विद्यार्थी में एकाग्रता आती है, जिससे वह अपनी पढ़ाई में ध्यान केंद्रित कर सकता है।

विद्यार्थी जीवन में अनुशासन की बहुत आवश्यकता होती है। यदि विद्यार्थी अनुशासित नहीं होगा, तो वह अपने जीवन में कभी सफल नहीं हो सकता। अनुशासन का अर्थ केवल नियमों का पालन करना ही नहीं है, बल्कि अपने विचारों, भावनाओं और कार्यों पर नियंत्रण रखना भी है।

अनुशासन से विद्यार्थी में आत्मविश्वास पैदा होता है। वह अपने जीवन में आने वाली हर चुनौती का सामना करने के लिए तैयार रहता है। अनुशासन से विद्यार्थी में सकारात्मक सोच का विकास होता है, जिससे वह अपने जीवन में सफलता प्राप्त कर सकता है।

अतः अनुशासन विद्यार्थी के जीवन की पहली सीढ़ी है, जो उसे सफलता के शिखर तक ले जाती है। एक अनुशासित विद्यार्थी ही अपने जीवन में हर लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है।

गुरुकुल विद्यालय के कक्षा बारहवीं के 83 विद्यार्थियों को मिलेंगे लैपटॉप के पैसे: सितंबर माह में विद्यार्थियों के अकाउंट में आएंगे 25,000; गुरुकुल के विद्यार्थियों हेतु कुल पैसे- 20,75,000(बीस लाख पच्चत्तर हजार), 12वीं में 75% से ज्यादा मार्क्स वालों को फायदा...

क्या लड़कियाँ आज भी कमजोर हैं ?

कु. साक्षी अहिरवार | कक्षा: नवमीं अ

एक लड़की के लिए दुनिया कभी नहीं बदलती है। वह देश की आजादी के बाद भी आजाद नहीं है। न तो स्वतंत्रता के बाद स्वतंत्र है। एक लड़की की दुश्मन एक लड़की ही होती है, अगर हम इस बात पर गहन चिन्तन करें तो यह सत्य है। एक लड़की चाहे तो वह एक दूसरी लड़की की ढाल बनकर रक्षा कर सकती है और चाहे तो कमजोर बना सकती है। हमारा देश कितना आगे बढ़ गया है, विकसित हो गया है लेकिन आज भी लोगों के विचार परिवर्तित नहीं हुए हैं। अगर लड़की किसी लड़के से बात करे तो वह उसे घिनौनी बात समझते हैं। उसे आजादी से सर उठा कर चलना भी मना है। लड़की को वेदों-पुराणों में लक्ष्मी, दुर्गा, सरस्वती, काली कहते हैं, उनकी पूजा करते हैं। लेकिन जब लड़की को घर से बाहर निकलना हो, पंख पसार कर उड़ना हो तो उसे घर की इज्जत, मान-मर्यादा, पिता की पगड़ी कह कर घर में ही रोक दिया जाता है। वह इस बात पर चिन्तन करते हैं कि लोग क्या कहेंगे? समाज क्या कहेगा? नाना प्रकार की बातों पर ध्यान देते हैं। क्या यह सही है? उन्हें इस बात तक सीमित कर दिया जाता है कि तुम सिर्फ घर को संभालो, लेकिन समाज इतना विकसित हो गया है कि अब औरत घर और बाहर दोनों को अच्छी तरह संभाल सकती है। उन्हें भी आजाद पंछी की तरह उड़ने का मौका मिले। क्या यही है लड़की की जिंदगी? "लड़कियाँ आज भी कमजोर हैं?" बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ। बेटी है तो जीवन है।

❖ माह अगस्त में प्रार्थना सभा से विद्यार्थियों द्वारा दिए गए वक्तव्य...

- ❖ दिनांक 03 अगस्त को पं. मैथलीशरण गुप्त की जन्म जयंती पर भाषा विभाग की ओर से छात्रा कु. लक्ष्मी राजपूत द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया |
- ❖ दिनांक 05 अगस्त को शिवमंगल की जन्म जयंती पर भाषा विभाग की ओर से श्रीमती प्रिया जैन के द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया |
- ❖ दिनांक 12 अगस्त को विक्रम साराभाई की जन्म जयंती पर विज्ञान विभाग की ओर से छात्रा कु. कंचन लोधी द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया |
- ❖ दिनांक 18 अगस्त को सुभाषचंद्र बोस की पूण्यतिथि पर कला एवं वाणिज्य विभाग की ओर से छात्रा कु. दीपिका लोधी के द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया |
- ❖ दिनांक 25 अगस्त को संस्कृत दिवस पर भाषा विभाग (संस्कृत) की ओर से छात्रा कु. अश्वनी ठाकुर के द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया |
- ❖ दिनांक 26 अगस्त को महिला समानता दिवस पर कला एवं वाणिज्य विभाग की ओर से छात्रा कु. भावना लोधी के द्वारा वक्तव्य प्रस्तुत किया गया |

******

मेरे सपनो का देश

महिमा कोरी | नवमीं ब

मेरा भारत देश है जहाँ एक दिन मुकम्मल शांति होगी। भारत एक ऐसा देश है, जो विभिन्न धर्मों, जातियों, भाषाओं और संस्कृतियों का संगम है। यहाँ के लोग मिल-जुलकर रहते हैं। मैं चाहती हूँ कि हमारे देश में सभी लोग मिल-जुलकर रहें। किसी भी व्यक्ति के साथ धर्म, जाति या लिंग के आधार पर कोई भेदभाव न हो। सभी को समान अधिकार मिलें। जहाँ सभी लोग शिक्षित हों। सभी को रोजगार के समान अवसर मिलें। गरीबी और भुखमरी का नामोनिशान मिट जाए। मैं चाहती हूँ कि भारत एक भ्रष्टाचार-मुक्त देश बने। जहाँ के राजनेता और अधिकारी ईमानदार हों। देश का विकास हो और सभी को न्याय मिले। मेरा भारत एक शांतिप्रिय देश हो। जहाँ हिंसा और आतंकवाद का कोई स्थान न हो। सभी लोग भाईचारे के साथ रहें। मेरा देश भारत पूरी दुनिया में एक शक्तिशाली और विकसित देश के रूप में जाना जाए। यही मेरे सपनो का भारत है।

"लक्ष्य का महत्व"

बबली प्रजापति | नवमीं ब

वह जीवन किस काम का है जिसमें कोई लक्ष्य न हो। लक्ष्य जरूरी है जीवन को आगे बढ़ने के लिए तथा निरंतर और सतत रूप से गतिमान रखने के लिए। कई लोगों को बचपन में ही उनके लक्ष्य से अवगत करा दिया जाता है, जिससे उनको अपना रास्ता सुस्पष्ट दिखाई देने लगता है। जिसके कारण उनके लक्ष्य में आवश्यक विधियों का पता लग जाता है और ये लोग लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए अधिक महत्वाकांक्षी हो जाते हैं, तथा इनके लक्ष्य को प्राप्त करने की प्रायिकता भी बढ़ जाती है। वहीं कुछ लोग अपनी समझ के अनुसार अपना लक्ष्य भी बदल लेते हैं।

"लक्ष्य हमारे जीवन की दिशा तय करता है। बिना लक्ष्य के जीवन उस नाव की तरह है जिसकी कोई पतवार न हो। लक्ष्य हमें आगे बढ़ने की प्रेरणा देता है।"

दौड़ से दूर, खुद के करीब...

डॉ. अमित नेमा (कंप्यूटर शिक्षक)

आज की इस अंधी दौड़ और दिखावे की दुनिया में हम 'और ज़्यादा' पाने के भारी दबाव में जीते हैं। हमारी ऊर्जा दूसरों को प्रभावित करने और बाहरी शोर में नष्ट हो जाती है। जीवन में 'कम' चाहने का अर्थ महत्वाकांक्षा खत्म करना नहीं, बल्कि समाज के दबाव से मुक्त होकर अपनी असली पहचान के साथ जीना है। इसका मतलब खोखले संपर्कों की जगह कुछ सच्चे रिश्ते निभाना और मानसिक शांति पाना है।

हमारी भारतीय परंपरा ने हमेशा सादगी का पाठ पढ़ाया है। असली आनंद चीजें इकट्ठा करने में नहीं, बल्कि जीवन में गहराई और उद्देश्य खोजने में है। आइए, इस अनावश्यक शोर को कम करें और अपनी आत्मा को सुकून दें।

सकारात्मकता, संगति और विवेक का महत्व ✍

श्री देवेन्द्र जैन (शिक्षक)

जीवन में हमारी सोच और हमारे आस-पास का वातावरण ही हमारे भविष्य की दिशा तय करता है। हम अपने मन में जितने अधिक सकारात्मक विचार रखेंगे, हमारा जीवन उतना ही शांत, सरल और आनंदमय बनता जाएगा। इसके विपरीत, यदि हम नकारात्मक विचारों को बढ़ावा देंगे या दूषित स्वभाव वाले लोगों की संगति में रहेंगे, तो जीवन धीरे-धीरे कष्ट, तनाव और भय से भर जाता है।

इसलिए, यह समझना हमारे लिए सबसे अधिक आवश्यक है कि हम अपने जीवन में किस प्रकार के विचारों को स्थान दे रहे हैं। सही क्या है और गलत क्या है, किसे अपनाना चाहिए और किसे तुरंत छोड़ देना चाहिए—इस बात का सही विवेक रखना ही मनुष्य की सबसे बड़ी बुद्धिमत्ता है। जब हम सोच-समझकर अपने जीवन से नकारात्मकता को त्यागते हैं और सकारात्मकता को चुनते हैं, तभी जीवन वास्तव में सार्थक और सफल बनता है।

कड़ी मेहनत का कोई दूसरा विकल्प नहीं होता। आज आप जितना पसीना बहाएंगे, आने वाले कल में आपकी सफलता की चमक उतनी ही दूर तक फैलेगी।

बुंदेली पहेलियाँ

अनामिका कुशवाह | नवमीं अ

1. बारे में बग्ला, भरजुआनी में सुआ, बुढ़ापे में कउआ, बताओ सखी के बरन भए ?
2. बऊ मिर्च को बीज भऊ छीलिया फूलो कचनार फलो नारियल ?
3. एक लई, दो फेंक दई, अन्त दतोन संग गई थी संग न आई जब संग मिलो जब संग आई ।
4. खुटा गाडो राऊ, खदरा घुमस गऊ ।
5. धक धक धकली भूरा जैंसी बकली हाथ में लेत के ।
6. खदश इमली, गऊ बकली, मूरा जैसी बकली हाथ में लेत के।
7. नौ गोठो की नौरंगी, धरनो मेलेत जाए। राजा पूछे रानी से कौन सा जानवर आए?
8. घामे में हरआए, संड में सूखे।
9. उलटो कुआ, छिन्ना पानी पी-पी जाए।
10. अन्न खाएँ पानी न पीरो।

श्रुतिसम भिन्नार्थक शब्द

कंचन दांगी | नवमीं अ

अंश - भाग | अंस – कंधा

अचर - पर्वत | अचला – पृथ्वी

ग्रह - नक्षत्र | गृह – घर

कुल - वंश | कूल – किनारा

जलद - बादल | जलज – कमल

पाणी - हाथ | पानी – जल

प्रमाण - सबूत | प्रणाम – नमस्कार

आसन - बैठने का स्थान | आसन्न – निकट

अतल - गहरा | अतुल - काफी बड़ा

अपेक्षा - उम्मीद | उपेक्षा – तिरस्कार

अपकार - बुरा | उपकार – भला

उपयुक्त - ठीक | उपर्युक्त - ऊपर कहा गया

चरम - अंतिम | चर्म – चमड़ा

आशंका - संदेह | शंका – डर

ओर - तरफ | और – तथा

जरा - बुढ़ापा | ज़रा – तनिक

उभय - दोनों | अभय - निडर

नीर - जल | नीड़ - घोंसला

अनल - आग | अनिल - वायु

परिणाम - फल | परिमाण - मात्रा

अन्न - अनाज | अन्य - दूसरा

प्रसाद - कृपा | प्रासाद - महल

समान - बराबर | सम्मान - इज्जत

अचार - खाद्य वस्तु | आचार - व्यवहार

अधम - नीच | अधर्म - पाप

अति - बहुत | इति - समाप्त

उदार - विशाल | उदर - पेट

कांति - चमक | क्रांति - परिवर्तन

अविलंब - शीघ्र | अवलंब - सहारा

उद्धार - कल्याण | उधार - मांगा हुआ

कृपाण - तलवार | कृपण - कंजूस

संस्कृत सप्ताह

संस्कृत है भाषा प्राचीन हमारी,
इसमें छुपी है सभ्यता सारी।
पढ़ो इसे मन लगाकर बच्चों,
यही है संस्कारों की क्यारी।
विद्या वही जो विनय सिखाए,
ज्ञान वही जो राह दिखाए।
"सत्यमेव जयते" को अपनाओ,
झूठ के पथ से सदा बचाए।
गुरु का आदर, माता-पिता का सम्मान,
यही तो है असली विद्वान।
पुस्तकों में मत ही सीमित रहना,
जीवन में भी उतारो ज्ञान।
अनुशासन से बड़ा न कोई गहना,
समय का मोल कभी मत भूलना।
"वसुधैव कुटुम्बकम्" का मंत्र लिए,
सबसे प्रेम से मिलना-जुलना।
परिश्रम ही सफलता की सीढ़ी,
हार से मत घबराना कभी।
हर विद्यार्थी बने एक दीपक,
फैलाए उजियारा जग में सभी।
संस्कृत सिखाती जीवन जीना,
कर्तव्य निभाना, धर्म से चलना।
यही है मेरा संदेश तुम्हें,
बनो सच्चे इंसान, यही है गहना।

✍ सिद्धांत जैन (शिक्षक)

जिंदगी में रास्ते कभी खत्म नहीं होते, बस लोग कई बार उम्मीद छोड़ देते हैं। कठिन परिस्थितियों में भी अपनी उम्मीद का दामन कभी भी कमजोर न पड़ने दें।

सायबर सुरक्षा और डिजिटल जागरूकता

आज का युग सूचना प्रौद्योगिकी और डिजिटल साक्षरता का युग है, जहाँ इंटरनेट हमारे जीवन का अभिन्न हिस्सा बन चुका है। इस डिजिटल दुनिया में सुविधा के साथ-साथ ऑनलाइन खतरों और सायबर अपराधों की संभावना भी तेजी से बढ़ी है। इसी महत्वपूर्ण विषय को ध्यान में रखते हुए, विद्यालयी पटल सज्जा के माध्यम से छात्र-छात्राओं में सायबर सुरक्षा (Cyber Security) के प्रति जागरूकता फैलाने का सुंदर प्रयास किया गया है।

यह पटल सज्जा केवल कला का प्रदर्शन नहीं है, बल्कि यह विद्यार्थियों और विद्यालय परिवार को एक सुरक्षित डिजिटल माहौल प्रदान करने की दिशा में एक सशक्त संदेश है। यह हमें यह सिखाती है कि इंटरनेट का उपयोग सतर्कता, जिम्मेदारी और जागरूकता के साथ किया जाना चाहिए, ताकि हम एक सुरक्षित डिजिटल समाज का निर्माण कर सकें।

पटल सज्जा



पहेलियाँ

नंदनी प्रजापति | कक्षा नवमीं अ

प्रश्न: ऐसा कौन सा रूम है जिसमें एक भी खिड़की और दरवाजा नहीं होता है?

प्रश्न: कौवा आसमान में उड़ता है, मगर रहता कहाँ है?

प्रश्न: ऐसी कौन सी चीज है, जो सभी खाते हैं लेकिन किसी को भी अच्छी नहीं लगती है?

प्रश्न: अंधेरे में बैठी है एक रानी, सिर पर है आग और बदन में है पानी?

प्रश्न: ऐसी कौन सी चीज है जिसे इंसान और भगवान दोनों ने बनाया है?

प्रश्न: ऐसा कौन सा पति है जो जंगल में भी रहता है और शहर में भी?

प्रश्न: ऐसा कौन सा पेड़ है जिसमें लकड़ी नहीं होती है?

तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता

सीमा खान | नवमीं ब

विचारों की त्वरित अभिव्यक्ति का शानदार मंच...

दिनांक 08 अगस्त 2026, शनिवार को विद्यालय में तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। विद्यार्थियों में त्वरित सोच, प्रभावशाली अभिव्यक्ति तथा अपने विचारों को आत्मविश्वास के साथ प्रस्तुत करने की क्षमता को मंच प्रदान करने वाली यह प्रतियोगिता तीन राउंड में आयोजित की गई। प्रतियोगिता में माध्यमिक, उच्च एवं उच्चतर माध्यमिक विभाग के विद्यार्थियों ने अपने-अपने सदन का प्रतिनिधित्व किया। प्रत्येक सदन से तीन प्रतिभागियों ने भाग लिया, जिनमें एक छात्र का होना अनिवार्य था। प्रतियोगिता की विशेषता यह रही कि प्रतिभागियों को सात-सात विषयों की सूची दी गई और चिट के माध्यम से विषय का चयन किया गया। इस प्रकार विद्यार्थियों को पहले से निश्चित विषय पर नहीं बल्कि तत्काल मिले विषय पर अपने विचार प्रस्तुत करने थे। प्रतियोगिता में पर्यावरण संरक्षण, जलवायु परिवर्तन, कृषि पद्धतियाँ, जीवाश्म ईंधन, प्राकृतिक आपदाएँ, नवीनीकरण ऊर्जा स्रोत, सौर मंडल, (माध्यमिक विभाग के प्रतिभागियों के लिये सुनिश्चित किये गए)। उच्च विभाग के प्रतिभागियों के लिए प्लास्टिक वरदान या अभिशाप, ग्लोबल वार्मिंग, ओजोन परत, मिशन गगनयान, कोशिका और कोशिकांग, विद्यार्थी जीवन में स्मार्टफोन की उपयोगिता, इलेक्ट्रिकल व्हीकल आदि विषय सुनिश्चित किए गए। उच्चतर विभाग के प्रतिभागियों के लिए AI बेहतर या खतरा, और भविष्य की नौकरियां, रोबोट मानव के लिए, सोशल मीडिया और मानसिक स्वास्थ्य, नोबेल पुरस्कार तथा ISRO जैसे ज्ञानवर्धक विषय शामिल किए गए। प्रत्येक प्रतिभागी को अपने विषय पर अधिकतम 4 मिनट तक भाषण प्रस्तुत करना था। निर्धारित समय से 30 सेकंड पूर्व चेतावनी घंटी बजाई गई। प्रतियोगिता में विषय-वस्तु, प्रस्तुतीकरण, भाषा-शैली, तथ्यात्मकता एवं तार्किकता तथा समय-सीमा के आधार पर मूल्यांकन किया गया। तात्कालिक भाषण प्रतियोगिता विद्यार्थियों के लिए अपने ज्ञान, तर्क, भाषा कौशल और आत्मविश्वास को प्रदर्शित करने का एक महत्वपूर्ण अवसर बनी। चिट के माध्यम से अचानक मिले विषय पर विचारों को क्रमबद्ध रूप करके प्रस्तुत करना विद्यार्थियों की त्वरित सोच और अभिव्यक्ति - कौशल की वास्तविक परीक्षा थी। यह प्रतियोगिता, केवल भाषण देने का अवसर नहीं, बल्कि कम समय में सोचने, विचारों को व्यवस्थित करने और उन्हें प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की कला सीखने का एक सुंदर अनुभव रही। "क्षण भर में विषय का चयन, विचारों का संयोजन और आत्मविश्वास के साथ अभिव्यक्ति प्रतियोगिता बनी प्रतिभा का शानदार मंच।"

हमारा बचपन

ओम अहिरवार | नवमीं ब

सबसे पहले सुबह की शुरुआत हुई, हम 4:00 बजे उठे, हमने और बापूजी ने नहा लिया। 5:00 बजे हमने और बापूजी ने कलेवा (नाश्ता) किया, फिर हम चल पड़े। थोड़ी देर चलने के बाद हमने हमारे बापूजी से पूछा कि हम कहाँ जा रहे हैं? तो बापूजी ने प्यार से कहा कि हम ऐसी जगह जा रहे हैं जहाँ तुम कभी भी नहीं गए। थोड़ी देर बाद हमने फिर पूछा, बापूजी ने फिर वही बात कह दी। हमें सब्र ना हुआ तो हमने फिर पूछा? तो बापूजी ने बड़ी तेज आवाज में कहा "एक कान के नीचे लगायेंगे तो सब पता चल जाएगा कि कहाँ जा रहे हैं, चुपचाप चलते रहो।"

बहुत देर चलने के बाद एक बड़े नीम के पेड़ के पास बहुत सारे बच्चे बैठे थे, एक श्रीमान कुर्सी पर बैठे थे। जैसे ही हम पेड़ के पास गए तो बापूजी ने नमस्ते कहा। बापूजी कहने लगे कि हमें अपने बालक का विद्यालय में दाखिला करवाना है। मास्टर जी ने हमें बुलाया और पूछा तुम्हारा नाम क्या है? हमने कहा "हमाओ नाम किस्सू है।" मास्टर जी ने कहा कि तुम्हारे पिताजी का नाम क्या है? तो हमने भी पूछ लिया कि "पहले तुम बताओ तुम्हारे पिताजी का नाम क्या है?" मास्टर जी दाँत किटकिटा के दिखाने लगे। हम चुप रह गए। उसके बाद हमारे बापूजी हमें छोड़कर घर जाने लगे तो हम रोने लगे। बापूजी कहने लगे कि हम बाजार जा रहे हैं तुम्हारे लिए जलेबी लेने। तो हम जलेबी की सुनकर चुप होकर बैठ गए।

चार-पाँच घंटे बीत गए, मास्टर ने हमें बैठे रहने को कहा। तनक (थोड़ी) देर बाद हमारे बापूजी आए। हम बापूजी से चिपक कर रोने लगे। बापूजी ने मास्टर से पूछा कि "इने कुछ करो तो नई?" मास्टर कहने लगे "आपकौ बालक बड़ौ खतरनाक है, इने हमारे हाथ में दाँत गड़ा दये (काट लिया)।" तो बापूजी कहने लगे "अब से वो ऐसो नई करहे, हम समझा देंगें।" फिर हम घर आ गए।

हर नई सुबह अपने साथ एक नया अवसर लेकर आती है, उसे पहचानें।

राखी बनाओ एवं मेंहदी लेखन प्रतियोगिता

रक्षाबन्धन पर्व की पूर्व बेला पर 26 अगस्त को विद्यालय में राखी बनाओ एवं मेंहदी लेखन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। जिसमें कक्षा छठवीं से बारहवीं तक के विद्यार्थियों ने अपनी सहभागिता की। सम्पूर्ण प्रतियोगिता शिक्षिका श्रीमती प्रिया जैन एवं सुश्री अनुभूति जैन के संयोजकत्व में तीन स्तरों (माध्यमिक, उच्च एवं उच्चतर) पर सम्पन्न हुई, जिसमें निर्णायक की भूमिका का निर्वाहन श्रीमती लिपि जैन एवं श्रीमती रूचि जैन ने किया। रचनात्मक और कलात्मक विकास हेतु विद्यालय में आयोजित हुई- मेंहदी लगाओ राखी बनाओ प्रतियोगिता में छात्राओं ने बढ़ चढ़कर अपनी प्रतिभागिता सुनिश्चित की।









धर्म और समाज में भेदभाव

दिव्या साहू | नवमीं ब

हम किसी भी धर्म की पुस्तक को उठाकर देखें, धर्म हमें अलग-अलग नहीं बल्कि एक इंसान, एक भाई की तरह रहना सिखाता है। गीता, कुरान, बाइबिल, गुरुग्रंथ साहिब, जैन धर्म, बौद्ध धर्म, सभी धर्म हमें प्रेम से रहना सिखाते हैं, फिर इंसान इंसान से क्यों जलता है? क्यों जाति-धर्म के नाम पर भेदभाव किया जाता है? आज भी समाज में छुआछूत का भेदभाव किया जाता है। भारत के संविधान में समानता का अधिकार दिया गया है लेकिन क्या वास्तव में समानता का अधिकार मिला है? आज भी समाज में किसी भी जाति या धर्म के लोगों के साथ छुआछूत और भेदभाव किया जाता है।

भारत के संविधान के अनुच्छेद 15 में यह कहा गया है कि किसी भी नागरिक के साथ धर्म, जाति, लिंग, जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव नहीं किया जाएगा। लेकिन आज भी हमारे समाज में जाति के नाम पर किसी के साथ बुरा व्यवहार किया जाता है। हम किसी भी जाति के हों, हम इंसान हैं। हम सभी एक समान हैं। कोई भी इंसान जन्म से महान नहीं होता, उसके कर्म उसे महान बनाते हैं। इसलिए हमें धर्म और जाति के आधार पर किसी के साथ भेदभाव नहीं करना चाहिए।





सम्पूर्ण पत्रिका में विचारों की अभिव्यक्ति कक्षा नवमीं के विद्यार्थियों द्वारा दी गई है...

सम्पादक मंडल -

श्रीमान प्रयंक जैन (प्राचार्य)

श्रीमती भारती राठौर (शिक्षिका)

डॉ. अमित नेमा (शिक्षक)

आज का दिन चाहे जैसा भी हो, उम्मीद रखें कि कल इससे भी बेहतर होगा।